आइए हिंदु सिद्धांत के कुछ विरोधाभास पर विचार करते है।
जीव प्रारब्ध या भाग्य नहीं बदल सकता।
जीव को अपने कर्म का फल मिलता है।

हिंदू स्पष्ट रूप से बताता हैं कि जो भी भाग्य में है वो हो कर रहेगा। किसी भाग्य का उसके द्वारा पूर्व जीवन में किए गए कर्मों द्वारा तय किया जाता है। उसमें बदलाव नामुमकिन है। आम आदमी की बात छोडो, महापुरूषों को भी प्रारब्ध भोगना पडता है। इसलिए, नकली पाखण्डि लोग जो भाग्य बदलने का दावा करते हैं वे अपराधी हैं क्योंकि वे भोले लोगों को धोखा दे रहे हैं। शास्त्रों का कहना है कि कार्यों से परिणाम पैदा होते है, उन परिणामों से कोई नहीं बच सकता। दूसरी ओर शास्त्रों का दावा है कि इस जीवन के आपके कर्मों के परिणाम के लिए आप उत्तरदायी हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

समस्या ये है यदि भाग्य को बदला नहीं जा सकता है तो हमारे कार्यों को भाग्य से तय किया जाएगा। उस मामले में नये कर्म कैसे होंगे? यदि कोई हत्या कर दी गई थी, तो मरना ये मरने वाले व्यक्ति के भाग्य में था। फिर, हत्यारे को बाद के जीवन में और लाखो वर्ष नरक में पीड़ा के अधीन क्यों किया जाता है?

जवाब जानने के लिए, हमें यह समझने की जरूरत है कि तीन प्रकार के कर्म हैं। वे है, संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म और क्रियमाण कर्म।

संचित कर्म जीव के पिछले अनंत मानव जन्मों के कार्य हैं।

संचित कर्मों का एक छोटा सा हिस्सा जिसका परिणाम वर्तमान जीवन में भुगवाया जाता है उसे प्रारब्ध कर्म कहते है।
क्रियमाण कर्म ऐसे कार्य होते हैं जिन्हें किसी व्यक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। क्रियमाण कर्मों का फल मिलता है। क्रियमाण कर्मों को ही जादातर कर्म के नाम से भी संबोधित करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

हत्या के मामले पर विचार करें। जिसकी हत्या होती है उस व्यक्ति का जीवन काल केवल उसकी हत्या के समय तक था। वह उसकी नियति थी। उस व्यक्ति की हत्या नही होती तो भी उस समय उसकी मृत्यु हो जाती।

लेकिन हत्यारे जानबूझकर दूसरे के जीवन को खत्म करना चाहते थे। हत्यारों ने ये सोचा कि इसको मारना है। ये सोचना अपराध है। ये पहले भी बताया जा चुका है कि भगवान मन की मनीषा देखते है। हत्यारों कि मनीषा खराब थी। इसी प्रकार उन लोगों को भी हत्या परिणाम भोगने पडते है जो अपराधी को मदद करते है, जो अपराधी को बचाने की तिकडम भिडाते है, चाहे वो कोई भी हो - रिश्तेदार, मित्र, वकील, पुलिस, नेता, मंत्री, जज - सब के सब जब नरक जायेंगे तो एक दूसरे को दोष देते हुए लाखो वर्ष भयानक यातना भोगेंगे।....मैं तो कह रहा था ऐसा करना ठीक नही है लेकिन इसीने कहा था कि कुछ नही होता, उपर से नीचे तक अपनेही आदमी है, सब दब जायेगा। अब कौन छुडायेगा? दबाने वाले तो सब यही है..इत्यादि

एक व्यक्ति अपनी संपत्ति खो देता है। यह उसका भाग्य था। अब, वह इसके बारे में क्या सोचता है ये क्रियमाण कर्म है। क्या वह भगवान को गाली देता है? क्या वह आत्मा के लाभ के लिए भगवान के फैसले को स्वीकार करता है? क्या वह नुकसान से नाखुश है या वह खुश है कि उसका मन अब धन में नही उलझेगा और इसे अब आसानी से भगवान में लगाया जा सकता है?

एक्सिडेंट में जब कोई मरता है। तो ये देखा जाता है कि ड्रायवर की कोई गलती तो नही है? उसने शराब तो नही पी रखी है? यदि है तो ही दंड मिलता है। क्योंकि ड्रायवर को ये पता है कि ऐसा करने से गाडी से किसी की मौत हो सकती है। अब संसार में तो झूठी गवाही आदि गलत सलत काम चलता है। लेकिन भगवान खुद नोट करता है और खुद फैसला सुनाता है। वहा कोई गवाह की जरूरत नही।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

रात को बारा बजे यदि कोई बंद दुकान का ताला हाथ में लिए देख रहा हो तो उसे पुलिस पकड लेती है। उसने चोरी नही की लेकिन चोरी करने की उसकी मनीषा थी।

हम भाग्य पर प्रतिक्रिया कैसे करते हैं ये हमारे हाथ में हैं और इसलिए हमारी सोच एक क्रियमाण कार्य है। हमारे साथ अच्छा या बुरा जो कुछ भी होता है, उस पर हमें सकारात्मक होना चाहिए। जो भी सुख दुःख मिलता है, उसे भगवान की कृपा मानना चाहिए।

अतः दोनो कथन सही है।

जीव भाग्य नहीं बदल सकता।
जीव को अपने कर्म का फल मिलता है।